सूरह — एक कहानी

सूरह अल-क़ियामह

क़ियामत

पूरा सफ़र — वो रब जो आपकी उँगलियों के पोर दोबारा बना सकता है —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 75 • 40 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

ला उक़्सिमु बि-यौमिल्-क़ियामह
1. मैं क़ियामत के दिन की क़सम खाता हूँ।

व ला उक़्सिमु बिन्-नफ़्सिल्-लव्वामह
2. और मैं मलामत करने वाले नफ़्स की क़सम खाता हूँ।

बला क़ादिरीन 'अला अन नुसव्विय बनानह
4. क्यों नहीं! हम उसकी उँगलियों के पोर तक ठीक बना सकते हैं।

वुजूहुंय्-यौम-इज़िन नाज़िरह। इला रब्बिहा नाज़िरह
22-23. उस दिन कुछ चेहरे तरो-ताज़ा होंगे, अपने रब की तरफ़ देखते हुए।

इला रब्बिक यौम-इज़िनिल्-मसाक़
30. उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ ले जाना है।

अ यह्सबुल्-इंसानु अंय्-युत्रक सुदा
36. क्या इंसान समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जाएगा?

दो क़समें: एक दिन, और आपके अंदर की एक आवाज़

बेटा, अल्लाह इस सूरह को दो क़समों से खोलते हैं — और ये जोड़ी पूरे क़ुरआन की सबसे ख़ूबसूरत जोड़ियों में से एक है: 'ला उक़्सिमु बि-यौमिल्-क़ियामह — मैं क़ियामत के दिन की क़सम खाता हूँ — व ला उक़्सिमु बिन्-नफ़्सिल्-लव्वामह — और मैं मलामत करने वाले नफ़्स की क़सम खाता हूँ।'

पहली क़सम मुस्तक़बिल के सबसे अज़ीम वाक़िए की है। और दूसरी एक निहायत छोटी और निहायत हाज़िर चीज़ की: वो छोटी आवाज़ आपके अंदर जो ग़लत करने के बाद चुभती है। 'ये तुम्हें नहीं कहना चाहिए था।' 'वो नमाज़ क्यों छोड़ दी?'

बेटा, अल्लाह इन दोनों को साथ साथ क्यों रखें? क्योंकि उलमा कहते हैं: नफ़्स-ए-लव्वामह आपके अंदर रोज़-ए-क़ियामत की एक रिहर्सल है। ये एक छोटी अदालत है जो अल्लाह ने हर सीने में लगा दी — एक गवाह, एक मुद्दई, और एक ना-गवार

फ़ैसला, सब एक ही सरगोशी में। अगर ऐसी अदालत आपके अंदर मौजूद है, तो ये अजीब क्यों कि आपके बाहर एक बड़ी अदालत मौजूद हो?

और यहाँ एक बहुत बड़ी रहमत छुपी है, बेटा। वो आवाज़ जो आपको डाँटती है, इस बात की निशानी है कि आपका दिल अभी ज़िंदा है। आफ़त वो शख़्स नहीं जो गुनाह करता है और चुभन महसूस करता है — आफ़त वो है जो गुनाह करता है और कुछ भी महसूस नहीं करता। तो जब पछतावा आपको काटे, उस से भागिए मत। अल्लाह ने उसकी क़सम खाई। उसे तौबा से जवाब दीजिए, और उनका शुक्र कीजिए कि वो अब भी बोलती है।

उँगलियों के पोर वाला जवाब

फिर अल्लाह वो ए'तिराज़ बयान करते हैं जो मक्का के मुनकिर बार बार दोहराते थे: 'अ यह्सबुल्-इंसानु अल्-लन नज्म'अ 'इज़ामह — क्या इंसान समझता है कि हम उसकी हड्डियाँ जमा नहीं करेंगे?' वो एक गली-सड़ी हड्डी ले कर, उसे अपनी उँगलियों में मसल कर, धूल को हवा में उड़ा कर हँसते: इस को कौन जमा करेगा?

और अल्लाह का जवाब कलाम के सबसे हैरत-अंगेज़ जुमलों में से एक है: 'बला — क्यों नहीं! क़ादिरीन 'अला अन नुसव्विय बनानह — हम उसकी उँगलियों के पोर तक ठीक बना सकते हैं।'

बेटा, रुक कर इस पर सोचिए। सवाल पूरी हड्डियों के बारे में था — बड़े, नुमायाँ ढाँचे। और अल्लाह जवाब में मेयार बहुत ऊँचा कर देते हैं: सिर्फ़ हड्डियाँ नहीं — हम **बनान**, उँगलियों के पोर, बिल्कुल वैसे ही बना सकते हैं जैसे वो थे।

इंसानी जिस्म के सारे हिस्सों में से, अल्लाह ने अपनी बारीकी की मिसाल के लिए उँगलियों के पोर ही क्यों चुने? चौदह सदियों तक पढ़ने वाले सोचते रहे। फिर, तक़रीबन हालिया तारीख़ में, इंसानियत ने ढूँढा कि हमारी उँगलियों की नोकों पर वो नन्ही लकीरें हर फ़र्द के लिए अलग हैं — कि अब तक जितने अरबों लोग गुज़रे, किसी दो के उँगलियों के निशान यकसाँ नहीं रहे, हमज़ाद के भी नहीं। आज पूरी दुनिया इसी हक़ीक़त से लोगों की शनाख़्त करती है, फ़ोन खोलती है, और मुजरिमाना

मुक़दमे तय करती है।

तो क़ुरआन ने, अल्लाह की बारीकी की मिसाल के तौर पर, ठीक वही जिस्मानी हिस्सा चुना जिसे इंसान एक दिन फ़र्द की शनाख़्त की असल तारीफ़ के तौर पर अपनाएगा। बेटा, उन के लिए दोबारा ज़िंदा करना धूल की कोई तक़रीबन जमा-बंदी नहीं — ये उँगलियों के पोर तक ठीक है। अभी अपने हाथ की तरफ़ देखिए और आयत दोबारा पढ़िए।

और फिर अल्लाह इनकार की असल वजह बे-नक़ाब करते हैं — क्योंकि ये कभी एक इल्मी मसला था ही नहीं: 'बल युरीदुल्-इंसानु लि-यफ़्जुर अमामह — बल्कि इंसान चाहता है कि अपने आगे गुनाह करता चला जाए।' वो पूछता है 'क़ियामत का दिन कब है?' जवाब जानने के लिए नहीं, बेटा, बल्कि अपने सामने का रास्ता खुला रखने के लिए ताकि जो चाहे करता रहे। ज़्यादातर इनकार, अपनी जड़ में, एक दलील नहीं होता। वो एक ख़्वाहिश होता है।

वो दिन जब आँख चुँधिया जाएगी

फिर सूरह वो दिन दिखाती है: 'फ़-इज़ा बरिक़ल्-बसर — तो जब आँख चुँधिया जाए, व ख़सफ़ल्-क़मर — और चाँद बे-नूर हो जाए, व जुमि'अश्-शम्सु वल्-क़मर — और सूरज और चाँद मिला दिए जाएँ।'

'यक़ूलुल्-इंसानु यौम-इज़िन अयनल्-मफ़र्र — उस दिन इंसान कहेगा: भागने की जगह कहाँ है? कल्ला ला वज़र — हरगिज़ नहीं! कोई पनाह नहीं। इला रब्बिक यौम-इज़िनिल्-मुस्तक़र्र — उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ ठिकाना है।'

बेटा, इसे महसूस कीजिए। इस ज़िंदगी के हर बुहरान का कोई न कोई दरवाज़ा होता है: पैसा, दवा, ताल्लुक़ात, एक मुल्क जहाँ उड़ कर चला जाए। उस दिन कोई नहीं। और ग़ौर कीजिए अल्लाह इसे कैसे कहते हैं: उन से कोई पनाह नहीं — वाहिद पनाह उन की तरफ़ है। इसी लिए मोमिन की पूरी ज़िंदगी एक ही सिम्त की ट्रेनिंग है: अल्लाह की तरफ़ दौड़ना, उन से दूर नहीं।

'युनब्ब-उल्-इंसानु यौम-इज़िम्-बिमा क़द्दम व अख़्ख़र — उस दिन इंसान को बताया जाएगा जो उसने आगे भेजा और जो पीछे छोड़ा।'

'बलिल्-इंसानु 'अला नफ़्सिही बसीरह — बल्कि इंसान अपने ख़िलाफ़ ख़ुद गवाह होगा — व लौ अल्क़ा म'आज़ीरह — चाहे वो अपने उज़्र पेश करता रहे।' बेटा, आपको किसी मुद्दई की ज़रूरत नहीं होगी; आप अपनी फ़ाइल ख़ुद जानते हैं। हर वो बहाना जो हम आज चमकाते हैं — 'मैं मसरूफ़ था', 'सब करते हैं', 'मैं बाद में ठीक कर लूँगा' — उस दिन हम ख़ुद उस पर यक़ीन नहीं करेंगे।

तूफ़ान के बीच एक तोहफ़ा

और अब, बेटा, इस आख़िरी दिन वाली सूरह के बीच में एक हैरत-अंगेज़ चीज़ होती है। चार आयतें अचानक एक तरफ़ मुड़ कर नबी ﷺ और उनकी तिलावत के बारे में बात करती हैं।

जब जिब्रील वही लाते, तो नबी ﷺ — इस डर से कि एक लफ़्ज़ भी उनके हाफ़िज़े से न निकल जाए — अपनी ज़ुबान जल्दी जल्दी हिलाते, फ़रिश्ते के साथ साथ दोहराते। और अल्लाह ने उनसे फ़रमाया: 'ला तुहर्रिक बिही लिसानक लि-त'अ्जल बिह — इस (क़ुरआन) को जल्दी लेने के लिए अपनी ज़ुबान मत हिलाओ। इन्ना 'अलैना जम्'अहू व क़ुरआनह — बेशक हमारे ज़िम्मे है इसका जमा करना और इसकी तिलावत। फ़-इज़ा क़र'अनाहु फ़त्तबि' क़ुरआनह — तो जब हम इसे पढ़ चुकें, तो इसकी तिलावत की पैरवी कीजिए। सुम्म इन्ना 'अलैना बयानह — फिर हमारे ज़िम्मे है इसकी वज़ाहत।'

बेटा, देखिए अल्लाह इन लाइनों में क्या क्या अपने ज़िम्मे लेते हैं: क़ुरआन का जमा करना, इसकी तिलावत, और इसकी वज़ाहत। तीन ज़मानतें, ख़ुद उठा ली गईं। इसी लिए क़ुरआन कभी गुम नहीं हुआ, कभी बदला नहीं गया, और कभी वज़ाहत के बग़ैर नहीं छोड़ा गया — और इसी लिए आज लाखों बच्चे पूरी किताब अपने हाफ़िज़े में उठा सकते हैं।

और इसमें हमारे लिए एक सबक़ है, बेटा: 'जल्दी मत करो।' इल्म खोने की बे-चैनी उसे महफ़ूज़ नहीं करती; उस ज़ात पर भरोसा जिसने वो दिया, और उसे तरतीब से

लेना, उसे महफ़ूज़ करता है।

फिर, फ़ौरन, सूरह हमारी तरफ़ लौट कर तशख़ीस करती है कि लोग इस सब से क्यों कतराते हैं: 'कल्ला बल तुहिब्बूनल्-'आजिलह — हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम फ़ौरी को चाहते हो — व तज़रूनल्-आख़िरह — और आख़िरत को छोड़ देते हो।' बेटा, ये रही एक ही लाइन में: बीमारी मुस्तक़बिल का इनकार नहीं है; ये **अब** की मोहब्बत है।

वो चेहरे जो अपने रब की तरफ़ देखेंगे

और फिर, बेटा, इस सूरह की सबसे ख़ूबसूरत जोड़ी आती है:

'वुजूहुंय्-यौम-इज़िन नाज़िरह — उस दिन कुछ चेहरे तरो-ताज़ा, रौशन होंगे — इला रब्बिहा नाज़िरह — अपने रब की तरफ़ देखते हुए।'

बेटा, ग़ौर से सुनिए। जन्नत के वो सारे बयानात जो आपने पढ़े — बाग़, नहरें, फल, रेशम, महल — और फिर ये: मोमिनीन अपने रब की तरफ़ देखेंगे। अहलुस-सुन्नह ने हमेशा इस आयत को, सहीह अहादीस के साथ, जन्नत के सबसे बड़े तोहफ़े की दलील माना है: अल्लाह का दीदार। नबी ﷺ ने बताया कि जब जन्नत वाले उसमें दाख़िल हो जाएँगे, अल्लाह पूछेंगे: क्या तुम कुछ और चाहते हो? वो कहेंगे: क्या आपने हमारे चेहरे रौशन नहीं किए, हमें जन्नत में दाख़िल नहीं किया और आग से नहीं बचाया? फिर पर्दा उठा दिया जाएगा — और जो कुछ भी उन्हें दिया गया, उन्हें अपने रब के दीदार से ज़्यादा महबूब कोई चीज़ न होगी।

और वो लफ़्ज़ों का खेल भी देखिए जो अल्लाह ने चुना, बेटा: 'नाज़िरह' — रौशन — और 'नाज़िरह' — देखते हुए। चेहरे इसलिए चमकते हैं क्योंकि वो कुछ देख रहे हैं। पाई हुई रौशनी मुनाकिस रौशनी बन जाती है।

और उसके बाद तज़ाद: 'व वुजूहुंय्-यौम-इज़िम्-बासिरह — और उस दिन कुछ चेहरे बिगड़े हुए होंगे — तज़ुन्नु अंय्-युफ़अ'ल बिहा फ़ाक़िरह — इस गुमान में कि उनके साथ कोई कमर तोड़ने वाली आफ़त की जाएगी।'

बेटा, सबसे बड़ी ख़ुशी से सबसे बड़े ख़सारे तक दो आयतों में — और इन दो चेहरों का

फ़र्क़ उन्हीं उम्रों से तय हुआ जो अब उनके पीछे हैं।

जब जान हंसली तक पहुँचती है

और सूरह का आख़िरी हिस्सा, बेटा, एक ऐसा मंज़र है जिसमें हम में से हर एक एक दिन असल किरदार होगा: 'कल्ला इज़ा बलग़ति-त्-तराक़ी — हरगिज़ नहीं! जब वो (रूह) हंसलियों तक पहुँच जाए — व क़ील मन राक़ — और कहा जाए: इसे कौन बचाएगा? व ज़न्न अन्नहुल्-फ़िराक़ — और उसे यक़ीन हो जाए कि ये जुदाई है — वल्तफ़्फ़तिस्-साक़ु बिस्-साक़ — और एक पिंडली दूसरी पिंडली से लिपट जाए — इला रब्बिक यौम-इज़िनिल्-मसाक़ — उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ ले जाना है।'

बेटा, देखिए क़ुरआन मौत के बिस्तर को कितनी बारीकी से फ़िल्म-बंद करता है। रूह हलक़ तक चढ़ती हुई। ख़ानदान बे-ताबी से इधर-उधर देखता हुआ: कोई हकीम है, कोई जो इसे बचा सके? मरने वाला ख़ुद अब जानता है — अंदाज़ा नहीं लगाता — कि ये हर उस चीज़ से जुदाई है जो उसके पास कभी थी। और फिर: उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ ले जाना है।

और सूरह ऐसे शख़्स के बारे में पूछती है: 'फ़-ला सद्दक़ व ला सल्ला — न उसने सच माना, न नमाज़ पढ़ी — व लाकिन कज़्ज़ब व तवल्ला — बल्कि उसने झुठलाया और मुँह फेरा — सुम्म ज़हब इला अह्लिही यतमत्ता — फिर वो अकड़ता हुआ अपने घर वालों की तरफ़ चला गया।' बेटा, एक ज़ाया की हुई ज़िंदगी की क्या तस्वीर है: न कोई सच क़ुबूल किया, न कोई नमाज़ पढ़ी — और फिर भी अकड़ता हुआ घर लौटा, अपने आप से ख़ुश।

फिर सूरह की आख़िरी दलील: 'अ यह्सबुल्-इंसानु अंय्-युत्रक सुदा — क्या इंसान समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जाएगा — बे-मक़सद, बे-हिसाब?'

'अ लम यकु नुत्फ़तम्-मिम्-मनिय्यिंय्-युम्ना — क्या वो एक टपकाया गया क़तरा न था? सुम्म कान 'अलक़तन फ़-ख़लक़ फ़-सव्वा — फिर वो एक जमे हुए ख़ून का लोथड़ा बना, और उसने उसे बनाया और ठीक किया — फ़-ज'अल मिन्हुज़्-ज़ौजैनिज़्-ज़कर वल्-उन्सा — और उससे दो जोड़े बनाए, मर्द और औरत।' और फिर

आख़िरी सवाल: 'अ लैस ज़ालिक बि-क़ादिरिन 'अला अंय्-युह्यियल्-मौता — क्या वो ज़ात मुर्दों को ज़िंदा करने पर क़ादिर नहीं?'

बेटा, पूरी सूरह वो दायरा बंद कर देती है जो उसने खोला था। जिस ज़ात ने एक इंसान को — जिसकी उँगलियों के पोरों में से कोई दो यकसाँ नहीं — उस एक क़तरे से बनाया जिसे कोई दोबारा नज़र उठा कर भी न देखता, उसे आपको दोबारा ज़िंदा करना मुश्किल न होगा। और उसने ये सब इसलिए नहीं किया कि आपको 'सुदा' — बे-मक़सद — छोड़ दे।

बयान हुआ है कि नबी ﷺ आख़िरी आयत पढ़ने के बाद कहते: 'बला — क्यों नहीं!' आप भी कहिए, बेटा, जब आप यहाँ पहुँचें।

इस सूरह से क्या सीखा

1. उस अंदर की आवाज़ को क़द्र की नज़र से देखिए जो आपको डाँटती है — असल ख़तरा उसकी ख़ामोशी है, उसकी चुभन नहीं।

2. आपकी उँगलियों के पोर रोज़ाना एक ख़ुत्बा हैं: जिसने उन्हें अलग बनाया वही आपको उसी बारीकी के साथ दोबारा ज़िंदा करेगा।

3. ज़्यादातर इनकार दलील नहीं एक ख़्वाहिश होती है — अपने बहानों की ईमानदारी से जाँच कीजिए।

4. उन से कोई पनाह नहीं; वाहिद पनाह उन की तरफ़ है — अभी उसी सिम्त दौड़ने की मश्क़ कीजिए।

5. अपने सीखने में जल्दी मत कीजिए: अल्लाह ने ख़ुद अपनी किताब का जमा करना, पढ़ना और समझाना अपने ज़िम्मे लिया।

6. असल बीमारी का नाम लीजिए: फ़ौरी की मोहब्बत — हर चुनाव 'अल-'आजिलह' और 'अल-आख़िरह' के दरमियान एक मुक़ाबला है।

7. सबसे बड़े इनाम का निशाना रखिए — रौशन चेहरे, अपने रब की तरफ़ देखते हुए

— और ऐसे जिए कि हंसली वाला लम्हा आपको तैयार पाए।

या अल्लाह, हमारे ज़मीर को ज़िंदा रखिए, और हमें उन में शामिल फ़रमाइए जिनके चेहरे रौशन होंगे, आपकी तरफ़ देखते हुए। आमीन।